

87-15

पञ्चवली आज राजस्व लोक कदालत कदल
रुवा कदल गुण्य पञ्चाला पर उद्वृत्त
दुनी। धार्मिक जाति व उर्ध्वपथी धार्मिक
उपासिका इल कद क आपसी सहकार
के निरुत्थरण होते से इल प्रकृत के
चलने का कोई कोचिन्न नहीं है। इल
प्रकृत स्वार्थी किय जाता है पञ्चवली
जिललशुभक हेर नक्कर से कद हे
तथा शामिल इल कद हे

॥



॥ श्री ॥

रामजी